कविता

संघर्ष तो अभी बाकी है

डा. उमेश प्रताप वत्स

छोड़ निराशा उठो पथिक,
संघर्ष तो अभी बाकी है।
दूर किनारा बुला रहा है,
पथ में काँटे भी बाकी है।
तम-तिमिर की ये राहें,
थाल सजाकर खड़ी पथिक।
चरैवेति-चरैवेति,
अभी राहे उजाला बाकी है।
न रूकना अभी न थकना कभी,
लक्ष्य साधे बढ़ते जाना।
बन शूरवीर और कर्मवीर,
इतिहास बनाना बाकी है।
उबड़-खाबड़, रोड़े-पत्थर, 2
राहें रोक न पाये कभी।
बन दृढ़ उपासक, धीर-वीर,
मंजिल आना अभी बाकी है।
ना ठहर तनिक तू चलता जा,
दीपक बाती सा जलता जा।
गोविन्द-शिवा के शौर्य सा,
ध्रुव बनना अभी बाकी है।
चिरकाल से संघर्ष की गाथा,
जो स्याह-रक्त से लिखता आया।

Scanned with OKEN Scanner

उसी तपस्वी महापुरुष को,
स्मरण करना भी बाकी है।
तोड़ निराशा के जाल को,
आशा की किरणें पुकार रही।
तू दो कदम बढ़ा कर तो देख,
आत्म-सुख खजाना बाकी है।

Scanned with OKEN Scanner